Introduction

प्राक्कथन

नवगीत हिन्दी की लयात्मक, छान्दस अनुबन्धन की अभिनव परिणति का नाम है। वैसे 'नवगीत' हिन्दी की गीत-विधा का ही एक अविभाज्य अंग है किन्तु वैचारिक पटल पर परिवर्तित सोच को उभारने के लिए तथा छन्दानुबन्धन में भी सहज, सरल तथा सम्मोहक मौलिक प्रयोगों का प्रस्तार करने के लिए नवगीतकार बड़े ही सक्षम प्रदानों के साथ सामने आते हैं। गीत जब भी अपने नये तेवर और नवीन आयामों के साथ परिवर्तित मुद्रा में सामने आया है, तब वह नवगीत के नाम से ही संबोधित हुआ है। विद्वानों ने हिन्दी साहित्य में इसका मुख्य सर्जनात्मक केन्द्र निराला से माना है। वैसे तो 'जुही की कली' जैसी रचनाओं में अछान्दस किन्तु लयात्मक-गयात्मक छन्द का प्रयोग कर निराला ने अपने दुःसाहसी युग-प्रवर्तक व्यक्तित्व को स्थापित किया था, किन्तु गीतों के रूप में सर्वथा नवीनीकरण का आग्रह उनकी विशिष्ट पहचान को कीर्तिमान-रूप में स्थापित कर देता है। निराला ने नवगीत के भव्य प्रासाद की नींव डाली और अपने अभिनव गीत-प्रयोगों से काव्य-रसिकों को आकर्षित किया।

छायावाद में यहीं गीत-तत्व साहित्यिक अन्यान्य विधाओं पर भी हावी रहा। नाटकों, एकांकियों में गीतों को समन्वित किया गया। प्रबन्ध एवं महाकाव्यों में भी गीतों की संयोजना करके उसके विशिष्ट आकर्षण को बनाये रखा गया। जयशंकर 'प्रसाद', महादेवी शर्मा तथा 'पन्त' जैसे स्थापित छायावादी हस्ताक्षरों ने भी इस गीत-विधा के आकर्षण को स्वीकार किया और नवगीत लेखन की परम्परा में अपना भी नाम अंकित करा लिया।

बदलते सोच और परिवर्तित कथ्य के माहौल ने छायावाद की आलोचना ही नहीं की, वरन प्रतिक्रिया के रूप में नये मतवादों का स्थापन भी हुआ। सामयिक-राजनीतिक सोच ने जहाँ गीतों में प्रगतिवाद के नाम पर साम्यवादी चेतना को अन्तःरूढ़ किया, वहीं मार्क्स व लेनिन के तथाकथित मानवीय सिद्धान्तों को भी इस मतवाद का मूल कथ्य घोषित किया गया। इस मतवाद ने प्रचलित गीत-परम्परा को एक बदलाव तो दिया किन्तु छायावाद जैसा सौन्दर्यवादी अभिगम इस स्थान से जैसे हट गया था और कथ्य की सपाट बयानी में गीत, जैसे पार्टी-जुलूस का बैनर बनकर रह गया था। गीतों में राजनीतिक नारेबाजियाँ और खेमावाद की संकुचित मनोदृष्टियाँ मुखरित होने लगीं थीं। हाँ इतना अवश्य है कि छायावाद के वायवी आकाश में विचरण करनेवाला कवि जमीन पर उतरकर आम आदमी से रूबरू होने की चेष्टा कर रहा था।

प्रगतिवाद का गीतकार कलावादी सोच से विमुख होकर नारेबाजियों से जब जुड़ गया, तब उसने काव्य के लोकवादी आकर्षण को खो दिया था। इसी कारण रहस्यवाद के नाम से जो युग स्थापित हुआ, उसमें गीत अधिक रूमानी तथा अधिक चिन्तनीय मुद्रा में सामने आया। काव्य में किसी मोड़ पर नयी कविता भी स्थापित हो चुकी थी। तारसप्तक के मंच पर मौलिक एवं अनूठा कथ्य लेकर बुद्धिवादी कविता के विविध तेवर प्रस्तुत किये गए। सोच और चिन्तन की मुद्रा में एक बदलाव आ चुका था। व्यक्ति अधिक बुद्धिवादी बनकर कविता के मंच से जुड़ा हुआ था। उसकी अनुभूति व अभिव्यक्ति में एक बड़ा अन्तराल दिखाई तब दिया जब उसका कथ्य उसकी वैचारिक जमीन से नितान्त अलग-थलग पड़ गया था। नयी कविता में कथ्य तो आम आदमी से रूबरू होने का था, उसके अभाव और पीड़ाओं, तकलीफों इत्यादि को उजागर करते हुए उसकी हिमायत करने का था, किन्तु अभिव्यक्ति इतनी अधिक बौद्धिक व गूढ़ हो चली थी कि आम आदमी इस कथ्य का स्पर्श भी नहीं कर पा रहा था।

कविता, राग व छन्द से जब भी पृथक् हुई है, परिणाम आत्मघाती ही सिद्ध हुआ है, क्योंकि आम आदमी के काव्याकर्षण का मुख्य कारण काव्य की सरस, संवेद्य और लयात्मक अभिव्यंजना ही है। वह काव्य का श्रवण करता है, झूमने के लिए, उसे बार-बार गुनगुनाने के लिए, उसके स्वरों में अपने स्वर समाहित करने के लिए और इस प्रकार के सानुकूल लयात्मक रागों में जब पाठक या श्रोता की स्वयं की संवेदनाएं भी मुखर होकर सामने आती हैं तब वह आत्म-अनुभूति से विभोर होकर उस गीतात्मक लय को आत्मसात कर लेता है। और यहीं तथ्य 'नवगीत' की सृष्टि का पहला पड़ाव है।

एक समय था, जब गीतों का आस्वादन कवि-सम्मेलनीय मंचों पर होता था। महादेवीय वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी व सुभद्रा कुमारी चौहान से लेकर आधुनिक गीतकारों में गोपालदास 'नीरज', बच्चन, रमानाथ अवस्थी, आत्मप्रकाश शुक्ल, किसन सरोज, सोमठाकुर, माहेश्वर तिवारी, बुद्धिनाथ मिश्र, रवीन्द्र भ्रमर, कुमार रवीन्द्र, उमाकांत मालवीय, नईम, महेश अनघ, यश मालवीय आदि ने अपने सरस गीतों से काव्यानन्दी आम आदमी को अपनी ओर सहज ही आकर्षित किया था। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक के गीतकारों का एक सर्वथा अप्रतिम व्यक्तित्व रहा है, जिन्होंने प्रतीक एवं बिम्बों के मौलिक प्रयोगों से कथ्य-चातुरी द्वारा अपने नवगीतों को एक नया संस्कार प्रदान किया है।

मैंने जब-तब गीतकारों के द्वारा नवगीतों का गायन या वाचन सुना, तो लगा कि जैसे हिन्दी काव्य की सर्वाधिक सक्षम विधा यही 'नवगीत' है, जिसमें राग है, रंग है, रस है, छन्द है, लय है, गति है, आकर्षण है, संवेदना है, कल्पना है, बिम्ब है, प्रतीक है और एक नयी सोच है जो श्रोता या पाठक को आम आदमी की सहज ज़िन्दगी से साक्षात्कार कराती है। नवगीतों में प्रकृति का अपरिमित सौन्दर्य है, आम के वृक्षों की कतारें हैं, इमली व अमरूद के पेड़ हैं, बरगद की छाया है, ताड़ व खजूर के छायाहीन वृक्ष हैं। लताएं हैं, बेले हैं, अंगूर के बागान हैं, करील की झाड़ियाँ हैं, धान व गेहूँ की झूमती फसलें हैं, अलसी और सरसों की सुन्दर और मनमोहक लहराती फसलें हैं, उजाड़ और मैदानी हरीतिमा है; जहाँ कलरव करते तोता, कबूतर, मैना, कोयल, बुलबुल, गौरैया तथा बया जैसे सुन्दर पक्षी हैं तो दूसरी और कौवे, चील, बाज और गिद्ध जैसे क्रूर और हिंस्र पक्षी भी हैं। यहाँ वृक्षों की डालरों पर दौड़ती-भागती

गिलहरियाँ हैं, यहाँ-वहाँ फुदकते खरगोश हैं, चौकड़ी भरते हिरन हैं, डाल-डाल झूलते, कूदते-फाँदते बन्दर हैं, दहाड़ मारते शेर हैं, तो लोमड़ी, सियार, भेड़िया, गीदड़, रींछ तथा उद्‌बिलाव जैसे वनचर भी हैं। यहाँ नगरों की अभिजात संस्कृति है, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, शौक के आमोदपूर्ण क्षण हैं, राजभवन हैं, अट्टलिकाएँ हैं, हवेलियाँ हैं, भवन हैं, तो यहाँ गाँव की सोंधी-सोंधी गन्ध भी है, मिट्टी की खुशबू है, खेत हैं, खलिहान हैं, झुग्गी-झोपड़ियाँ व कच्चे मकानों की कतारें हैं, कच्ची सड़कें और पगडंडियाँ हैं, ठाकुरों व जमीनदारों की हवेलियाँ हैं, पंचायती चौपालें हैं, देहात हैं, तहसील हैं, कस्बे हैं, मेले व त्योहार हैं। यहाँ बेरोजगारी से जूझता हुआ नयी पीढ़ी का जवान लड़का है, दहेज के अभाव में प्रौढ़त्व प्राप्त करती बेटियाँ हैं, कर्ज और मुकदमें का मारा बूढ़ा गृहस्थ है, पेट के लिए कड़ी धूप में हल चलाता गरीब किसान है, बार-बार कर्मों को कोसता और पत्थर के देवी-देवताओं को पूजता, अन्दर से टूटा हुआ थका-हारा मजदूर है। शादियाँ, यज्ञोपवीत, मुंडन, नामकरण, बरसी, चौबरसी, श्राद्ध जैसे पौराणिक संस्कार हैं, नयी बहू का आगमन है; महावर, मेंहदी, सिन्दूर, बिन्दी, काजल, ओढ़नी, फरिया, लहँगा, पायल, नथुनी, बाली पैजनी तथा कंचुकि जैसी सांस्कृतिक विरासते हैं। यहाँ खीझ है, आक्रोश है, कलह है, क्लेश है, दमन है, शोषण है, संताप है, गुलामी है, मुकाबला है, आक्रमण है, इन्कलाब है, क्रान्ति है। और भी बहुत कुछ है जो एक आम आदमी की सोच में लिपटा हुआ है।

इतनी सारी सम्पदा को लिये हुए 'नवगीत' जब मेरे सामने आया, तो मुझे लगा कि इस 'गीत' से जुड़ कर ही इसके आन्तरिक वैभव को जाना जा सकता है। मेरे मन का यही आकर्षण मुझे मेरी शोध-यात्रा से जोड़ गया। लगातार दस वर्षों से अधिक नगरीय परिवेश में रहते हुए भी मेरा मन गाँव-केन्द्रित रहा है। ग्राम्य-संस्कारित दृष्टि राष्ट्रीय विकास के विसंगत स्वरूप को एकटक देखती रही है, जिसमें गाँव की अत्यधिक उपेक्षा की गई है। अपने ग्राम्य-चेतन एहसास को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित नवगीत रचनाओं में व्यक्त देख पाना मेरे लिए विरल अनुभव था। इसलिए यह अकारण नहीं हुआ कि नवगीत-काव्य में मेरी भाव-चेतना आश्रय ढूंढ़ने लगी।

विवेच्य विषय की प्रस्तुति

नवगीत के समूचे वृत्त की जाँच-पड़ताल व लेखांकन मेरे शोध-प्रबन्ध का लक्ष्य रहा है। जिसके मद्देनजर विषय के विभिन्न आयामों का विवेचन-विश्लेषण करने के निमित्त जो रूप-रेखा बनी उसे दश अध्यायों तथा उपअध्यायों (बिन्दुओं) में सम्मिलित किया गया है।

पहले अध्याय में नवगीत की पृष्ठभूमिकी विस्तृत चर्चा की गई है। इस अध्याय में उन समकालीन परिवेश और परिस्थितियों को चित्रित किया गया है जिन्होंने नवगीत को विस्तृत जमीन और खुला आसमान प्रदान किया, जिसके कारण नवगीत को अपनी पहिचान स्थापित करने का अवसर मिला और वह अपने विकास की ओर तेजी से उन्मुख हुआ।

दूसरे अध्याय में 'नवगीत' की पहिचान को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है जिसमें गीत के अन्य रूपों से नवगीत के तुलनात्मक अध्ययन को संक्षेप में सामने रखा गया है। पारम्परिक गीत, लोकगीत,

जनवादी, गीत, छायावादी गीत, छायावादोत्तर गीत तथा नयी कविता से 'नवगीत' किस तरह से अपनी अलग पहचान लेकर अस्तित्व में आया और स्थापित हुआ तथा काव्य के इन रूपों से नवगीत की क्या भिन्नता है ? इन बातों को यथासंभव संक्षेप में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत नवगीत के प्रारम्भ और उसके तदनन्तर विकास-क्रम को प्रस्तुत किया गया है । नवगीत की प्रवृत्ति और प्रकृति के आधार पर उसके निरन्तर विकास को प्रमुखतः तीन चरणों में विभक्त किया गया है और विकास यात्रा के महत्वपूर्ण मोड़ों को दृष्टिगत रखते हुए भ्रमपूर्ण समस्याओं का निराकरण करने का प्रयत्न भी किया गया है ।

चौथे अध्याय में नवगीत की 'साज-सज्जा' पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ है । इसके अन्तर्गत गीतों के छान्दस अनुबन्धन, राग-रंग और लयात्मकता को सोदाहरण स्पष्ट किया गया है ।

पांचवे अध्याय में नवगीत की 'कला-संचेतना' को उसके विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है जिसमें सजीव बिम्ब एवं सार्थक प्रतीक संयोजना और उसकी भाषा की विस्तृत विवेचना सोदाहरण की गई है ।

छठे अध्याय में नवगीत के 'औदार्यवादी अभिगम' का उल्लेख किया गया है जिसके अन्तर्गत 'मानवीय संवेदना', 'आत्मीय संस्पर्श', तथा 'व्यष्टि और समष्टिपरक औदार्य' पर पर्याप्त चर्चा हुई है ।

सातवे अध्याय में नवगीत की 'सांस्कृतिक पहचान' को प्रस्तुत किया गया है । इसके तहत नवगीत का संस्कृति से सरोकार तथा नवगीत में चित्रांकित पारिवारिक सन्दर्भों का सविस्तार उल्लेख किया गया है।

आठवे अध्याय में नवगीत के 'वर्ण्य, कथ्य और प्रस्तुति' को स्पष्ट कर सोदाहरण उनका उल्लेख किया गया है । इसमें नवगीत के विविध आयामों को सम्मुख रखकर उनका विस्तृत विवेचन और विश्लेषण किया गया है । इसके अन्तर्गत सामाजिक मूल्यों की तलाश, राजनीतिक परिवेश, प्राकृतिक परिदृश्य व्यंग्य तथा मिथक-प्रयोग पर गम्भीरता से प्रकाश डाला गया है ।

नवे अध्याय में नवगीत के प्रमुख हस्ताक्षरों एवं साहित्य में उनके महत्वपूर्ण प्रदानों का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है । शोध-प्रबन्ध की मर्यादा की संरक्षा की मंशा से यथाशक्य विस्तार से बचने की कोशिश की गई है । इसीलिए नवगीतकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनकी रचनात्मक विशेषताओं के अध्ययन को यहां यथाशक्य संक्षेप में विश्लेषित करने का प्रयत्न किया गया है ।

दसवे अध्याय में 'उपसंहार' के अन्तर्गत निष्कर्षों के आधार पर शोध-विषय के प्रतिपादनों के विवरण और उपलब्धि का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । सीमाओं का आकलन और संभाव्य दिशाओं का अनुमान भी प्रस्तुत है ।

आभार

स्नातकोत्तर कक्षा में अध्ययन के दौरान मेरी अभिरुचि अनायास ही नवगीतों की ओर उन्मुख हुई, तभी से मैंने नवगीत का विस्तृत अध्ययन करने का निश्चय कर लिया था। स्नाकोत्तर शिक्षाग्रहण कर लेने के पश्चात मेरी अभिरुचि के अनुकूल वातावरण मिला और नवगीत-साहित्य पर शोधकार्य करने का निर्णय कर लिया। एम.ए. करने के बाद महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा में ही मैंने शोध-कार्य हेतु अपना पंजीकरण जाने-माने विद्वान डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के निर्देशन में करा लिया जो स्वयं भी नवगीत के एक स्थापित हस्ताक्षर हैं। शोध-प्रबन्ध के विषय का चयन और पल्लवन इन्हीं की सत्प्रेरणा से फलीभूत हुआ। विषय अत्यन्त विस्तृत था और आधारभूत सामग्री की विरलता के कारण कठिन भी; परन्तु उनके कुशल निर्देशन में समस्त बाधाएं सहजता से दूर हो गईं। यह शोध-प्रबन्ध उन्हीं के सौजन्य पूर्ण पथ-प्रदर्शन का व्यक्त रूप है। आदरणीय गुरुवर डा. प्रताप नारायण झा (प्राध्यापक एवं पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा) के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन किये बिना नहीं रह सकता, अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी उन्होंने समय-समय पर उचित दिशा-निर्देश दिये हैं। साथ ही डा. अक्षयकुमार गोस्वामी, डा. शैलजा भारद्वाज, डा. ओ. पी. यादव तथा डा. अनुराधा दलाल के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। उन सृजनशील विद्वान लेखकों, गीतकारों तथा प्राध्यापकों, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में सहयोग प्राप्त हुआ, उनका मैं आत्मिक रूप से आभारी हूँ। विशेष रूप से शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में सहयोग प्राप्त हुआ, उनका मैं आत्मिक रूप से आभारी हूँ। विशेष रूप से श्रद्धेय स्वजन डा. नन्दलाल सिंह (रीडर, भौतिक विभाग, म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा) और अपनी बुआ श्रीमती पद्मा सिंह का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके स्नेहिल उत्साहवर्द्धन से मेरे शोधकार्य में निरन्तर सक्रियता बनी रही। उनसे प्राप्त आत्मीयता को मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। जिन सक्षम नवगीत-हस्ताक्षरों का विशिष्ट अनुग्रह मुझे प्राप्त हुआ है, मैं उनके प्रति भी श्रद्धानत हूँ, इनमें श्री सोमठाकुर, माहेश्वर तिवारी, किसन सरोज तथा कुँवर बेचैन से मैं अधिक अनुप्रेरित एवं आदरणीय नीरज जी, भरतभूषण, शिव ओम अंबर, किशोर काबरा, डा. अम्बाशंकर नागर आदि का जो मार्गदर्शन मुझे मिला, मैं इनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही अपने अनुज डा. चन्द्रप्रकाश सिंह का सहृदय आभार व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ, जिन्होंने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाने में सदैव सहयोग बनाये रखा।

अन्त में परम् पूज्य स्व. पिताजी व पूजनीया माँ के श्री चरणों की कृपा का अक्षय आशीर्वाद अनुभव करते हुए यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहा हूँ।

- सूर्यप्रकाश सिंह